जेर का रूके रहना

गर्भकाल की आखिरी अवस्था में गर्भपात

पैरों पर सूजन

अंडकोष की सूजन

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें: **केंद्रीय प्रयोगशाला, लुवास, हिसार**
फ़ोन: **01662-256105**

ब्रूसेलोसिस

बचाव एवं रोकथाम

डॉ. महावीर सिंह एवं डॉ. राजेश छाबड़ा

केंद्रीय प्रयोगशाला
लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय
हिसार-125004

ब्रूसेलोसिस रोग

ब्रुसेलोसिस एक संक्रमण रोग है, जो ब्रूसेला नामक जीवाणुओं से फैलता है। इससे डेयरी उद्योग को भारी आर्थिक नुकसान हो रहा है। यह रोग मुख्य रूप से गाय, भैंस, भेड़, बकरी, ऊँटो, सुअर एवं कुत्तों में मिलता है।

ब्रूसेलोसिस रोग के लक्षण

- पशुओं में गर्भावस्था की अंतिम महीनों में गर्भपात होना
- गर्भपात के बाद चमड़े जैसा जेर का निकलना
- पशुओं में जेर का रूकना एवं गर्भाशय की सूजन
- नर पशुओं में अंडकोष की सूजन
- पशुओं के घुटनों में पानी भर जाना

संक्रमण

गर्भपात होने के बाद ब्रूसेला जीवाणु रोगी पशुओं के गर्भनाल तथा योनि स्त्राव में अत्याधिक मात्रा में पाए जाते हैं। यह बीमारी संक्रमित पशुओं की जेर तथा योनि स्त्राव के सम्पर्क में आने से स्वस्थ पशुओं में फैलती है। संक्रमित नर पशुओं के वीर्य से मादा पशुओं में भी यह रोग फैल सकता है। यह रोग संक्रमित पशुओं के जेर तथा योनि स्त्राव के संपर्क में आने से और कच्चा दूध पीने से मनुष्यों को भी हो सकता है (जूनोटिक संक्रमण)।

ब्रूसेलोसिस रोग की जाँच

पशुओं में गर्भकाल की आखिरी अवस्था में गर्भपात होने पर इस बीमारी की जाँच जरूर करवाएं। इस बीमारी की जाँच नजदीकी पशु चिकित्सालय या केन्द्रीय प्रयोगशाला, पशु चिकित्सा महाविद्यालय, लाला लाजपतराय पशुचिकित्सा एवं पशुविज्ञान विश्वविद्यालय, हिसार में करवाई जा सकती है। बीमार पशु की प्रयोगशाला में जाँच करवाने के लिए पशुचिकित्सक की सहायता से खून का नमूना नई सिरींज में लें। खून लेने के बाद उसे एक घण्टे तक छाया में रखें और खून जम जाने के बाद प्रयोगशाला में भिजवा दें। गर्भपात होने के 21 दिन बाद फिर से खून की जाँच करवानी चाहिए। जाँच के लिए जेर या योनि स्त्राव, जीवाणु मुक्त डिब्बी में लेकर प्रयोगशाला में भेज सकते है।

ब्रूसेलोसिस रोग का प्रबंधन तथा रोकथाम

इस बीमारी का पशुओं में इलाज नहीं है। पशुओं में टीकाकरण अपनाकर ही इस बीमारी से बचा जा सकता है।

- ब्रुसेल्ला S-19 वैक्सीन से टीकाकरण करवाना चाहिए। यह टीका 4-8 महीने की मादा बछड़ी/कटड़ी में लगाया जाता है।
- नर पशुओं में इस बीमारी का टीकाकरण नहीं करना चाहिए।
- पशुओं में टीकाकरण करते समय सावधानी रखें तथा आँखों के ऊपर चश्मा व हाथो मे रबर के दस्तानो का प्रयोग जरूर करें।
- नए पशुओं को फार्म पर लाने से पहले बीमारी की जाँच करवाएं व उन्हें पुराने पशुओं से कम से कम एक महीने तक अलग रखें। संभव हो तो एक महीने बाद दोबारा जाँच करवा कर ही उन्हे शेष पशुओं में मिलाएं।
- अगर किसी पशु को गर्भकाल के तीसरी तिमाही में गर्भपात हुआ हो तो उसे तुरंत बाकी पशुओं से अलग कर दिया जाना चाहिए, क्योंकि उसके स्त्राव द्वारा अन्य पशुओं में संक्रमण फैल सकता है।
- अगर पशु को गर्भपात हुआ है तो खून की जाँच करानी चाहिए। आसपास के स्थान को भी जीवाणु रहित करना चाहिए।
- गर्भनाल व भ्रूण को सही तरीके से गहरा गड्डा खोद कर दबाएं। किसी अच्छे कीटाणुनाशक घोल से फर्श व दीवारों पर नियमित छिड़काव करें।
- रोगी मादा पशु के कच्चे दूध को स्वस्थ नवजात पशुओं एवं मनुष्यों को नहीं पिलाना चाहिए। दूध को उबाल कर ही उपयोग करना चाहिए।
- पशु फार्म पर स्वच्छता व उचित प्रबंधन का खास ख्याल रखें।